नहीं है, पर हर साल नदी (तटबन्ध के बीच का जमीन) में 52 (बावन) मन खेसारी छींटते हैं। मुझ किसान के बेटे को समझते देर नहीं लगा कि 52 मन खेसारी कितना बीघे में पैरा जायगा। इसके अलावे नदी के बाहर भी उनकी जमीन थी। धीरे–धीरे उनसे निकटता बढ़ती गई।

एक दिन अंधेरा होने पर मनी महतो मेरे कैम्प पर आये। कहने लगे कि हर साल बाभन सब मेरा गेहूँ चरा देता है, टोकने पर मारने दौड़ता है। डर से मना नहीं करते हैं। मैंने कहा कि डरिये मत, मना कीजिए, मारता है तो दो–चार लाठी रख लीजिए। थाने में जाकर रिपोर्ट दर्ज कराइये, फिर देखिए कि क्या तमाशा होता है। वैसा ही हुआ। अपने दोनों बेटों के साथ खेत पर गये। भैसों को खेत से हॉकने लगे तो भैंसवार सब खिश में इन पर लाठी लेकर टूट पड़े। दो चार लगा भी, हल्की चोट लगी। बाप–बाप चिल्लाते भागे, थाने गये, रिपोर्ट लिखाये, भैंसवारो से घमकियाँ भी मिली, पर जब पुलिस हथकड़ी–रस्सी ले उन्हें ढूँड़ने लगी, तब मामले की गंभीरता भैंसवारों को समझ में आया। जमानत लेने में दूध का जमा पैसा समाप्त हो गया। मधुबनी कोर्ट में ट्रायल शुरू हुआ तो घर का गहना–गुरिया बिकने लगा। तब जाकर सबने मनी महतो के घर जाकर सरेंडर कर दिया। अंधेरा होने पर फिर मनी महतो मेरे पास आये। बोले कि ब्राह्मण होकर मेरा गोड़परिया कर रहे हैं, दया आ रही है, अब क्या करे? मैंने एक–दो तारीख और देख लेने के लिए कहा। कुछ दिनों बाद वे फिर अंधेरे में आये। बोले कि बाल –बच्चों सहित सब मेरे घर पर आये थे। कहते थे कि महतो जी, माफ कर दीजिए नहीं तो यहीं पर जान दे देंगे। ब्राहमण हत्या का पाप लगेगा, क्या करें। मुझे यह परिवर्त्तन अच्छा लगा। पहले मनीया से मनी महतो, फिर मनी महतो से महतो जी। मैंने कहा कि समझौता कर लीजिए। अब उनका झण्डा गड़ गया। फिर कोई उनके फसल की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखता। फिर उन्हें अंधेरे में आने की जरूरत नही पड़ी। मनी महतो के दो बेटे थे। बड़ा बेटा भागवत महतो, कुछ पढ़ा–लिखा, हिसाब–किताब कर लेता था। किराने की दुकान चलाता था। छोटा बेटा शुकदेव महतो दस्तखत भर करना जानता था, खेती का काम देखता था। कमला–वलान तटबंन्ध में एक ठीकेदार थे बाबू राम सजीवन सिंह। फटकी में ही डेरा था उनका। उनके मजदूरों का खर्चा–खुराक भागवत महतो ही चलाते थे। जब ठीकेदार साहब का चेक भजता तो दुकान का भुगतान कर देते। मुझे मालुम हुआ तो मैंने भागवत महतो को समझाया। पूँजी आपकी, मुनाफा उनका। यह मुनाफा आपका भी हो सकता है। मैंने उन्हें रास्ता बताया, केशरी बाबू जिनकी चर्चा ऊपर की गई है, उनसे भी मदद करने का आग्रह किया। छोटे–छोटे कामों को करते हुए भागवत महतो ठीकेदार हो गये। यही नहीं बॉकी गाँव के कुमेश्वर महतो, गुनाकरपुर के राम लखन महतो भी देखा–देखी ठीके का काम करने लगे। सुनने में आया है कि उनकी पीढ़ियाँ बहुत आगे बढ़ गई हैं।

थोड़ा सहारा, थोड़ा मार्ग दर्शन, समाज–को आगे बढ़ा देता है। आपके जीने का ढ़ंग, आपका–जीवन समाज के लिए प्रेरणा–श्रोत हो। चुकिये मत, समाज को आगे बढ़ाइये।

राम बिलाश सिंह

फोरम गीत

बड़े यतन से तैयार हुआ फोरम का संगठन।
असंख्य अभियंता जुड़ते गए त्याग कर सबबंधन।।
आज यह बुद्धिजीवियों का विषाल संगठन।
अब पटना में बन गया है भव्य फोरम भवन।।
महात्मा ज्योतिराव फुले थे समाज सुधारक।
कुशवाहा समाज से ही थे ये महान विचारक।।
जगदेव प्रसाद, जगदीश मास्टर व ज्योतिप्रकाश।
इन शहीदों ने किया समाज का चतुर्दिक विकाश।।
अब तक नहीं भूले निर्मल व चंद्रशेखर का बलिदान।
क्रान्तिकारियों में जीवन्त हैं अपने कुशपुत्र महान।।
अमर रहें अपने मौर्यवंशीय कुशवाहा स्वाभिमानी।
होहिं सहज कर्मठ क्रान्तिकारी निर्भिक बलिदानी।।
सत्य अहिंसा एकताधर्म का हमने ही पाठ पढ़ाया।
बुद्धम् संघम् घम्मं शरण में जाने की राह सूझाया।।
सत्य अहिंसा क्षमा एकता राग जनजन को भाया।
यही सन्मार्ग आगे चलकर दुनिया ने अपनाया।।
छुआ छुत, ऊँच नीच का भेद भाव हमने हटाया।
धार्मिक कट्टरता मिटा स्वतंत्रता का बिगुल बजाया।।
चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिकन्दर से लोहा लेने की ठानी।
उखड़ा पाँव पार न कर सका वह झेलम का पानी।।
मौर्यवंश में ही अवतरित हुए अपने अशोक महान।
जिनको महिमा मंडित करता है पुरा हिन्तुस्तान।।
अशोक स्तम्भ से मादरेहिंद को मिला प्रतीकचिह्न।
कुशवाहा समाज की गौरवगाथा है औरों से भिन्न।।
हम अभियंता भी हैं ऐसे महानों की संतान।
प्रबुद्ध जन अपने फोरम का करते हैं गुणगान।।
अपने अभियंता फोरम का हर उद्देश्य महान।
समाज के निर्धन मेधावियों का हो कल्याण।।
छात्रवृति प्रदान करता फोरम उनका सम्मान।
फोरम चाहत सबका सामाजिक आर्थिक उत्थान।।
अपना फोरम नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाता है।
अभियंता फोरम शिक्षा का अलख जगाता है।।

ससम्मान जीवन जीने की कला सिखलाता है।
एक बनकर नेकडगर पर चलना हमें आता है।।
भविष्य में असंख्य समर्पित अभियंतागण आएंगे।
कुशवाहा अभियंता फोरम का परचम लहराएंगे।।
अपनी प्रतिभा से अपना अलग पहचान बनाएंगे।
मस्तक अपने फोरम का और ऊँचा कर जाएंगे।।
जब तक बहेगा बसुंधरा गंगा में निर्मल पानी।
तब तक हम लिखेंगे फोरम की अमिट कहानी।।
अपना खून पसीना फोरम हेतु अहर्निष बहाएंगे।
फोरम के आन बान शान पर हम मर जाएंगे।।
अपने फोरम का अबतक का अतीत गौरवमय है।
आगिल राह भी इसका प्रषस्थ व ज्योतिर्मय है।।
अमर रहे कुशवाहा अभियंता फोरम अपना।
हर अभियंता का है यह एक सुन्दर सपना।।
इति करहिं यह कुशवाहा अभियंता फोरम कथा।
अभियंता अशोक इन्दु सिंह कह्यो स्वमति यथा।।

सौजन्य–

इ० अशोक कुमार सिंह
सहायक अभियंता (से०नि०)
(आ०स०सं०–39)

अभियंता का अभियान

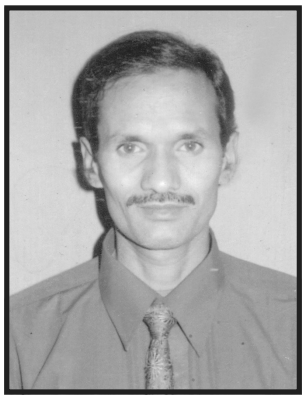

आदि काल के थे अभियंता, नाम था उनका विश्वकर्मा।
रची संरचना मनमोहन देवों को, जो था उनकी परिकर्मा।।
राम राज्य के नल–नील अभियंता, समुन्द्र तल पर पुल बनाये।
लंका जीत विजयी प्राप्त कर, पुष्पक विमान से सीता संग आये।।
जब महाभारत की बात आती है तो उधर पुत्रमोही अंधा धृतराष्ट्र
अपने पुत्र मोह में यह कर दिखाता है कि–
हिस्तनापु के रंगमहल में मुक बैठे थे भीष्मपितामह।
भरी सभा मे हो रही थी, द्रौपदी का चीर हरन।
चहक रहा था दुष्ट दुर्योधन, चुप बैठे वीर बलवान।
चीख रही थी, चिल्ला रही थी, कह रही थी, बचाओ मेरी लाज भगवान।
खींच रहा था द्रौपदी का ऑचल, अंहकारी पापी दुर्योधान बलवान।
हॅस रहा था, उछल रहा था, अभिमानी कौरव का कारनाम।
गरज रहा था, चिल्ला रहा था, कह रहा था, देखता हुॅ कौन वचाता है तझे भगवान।
छाया था सन्नाटा भरी सभी में, नंगा नाच हो रहा था।
लग रहा था अब न बचेगा, बहु द्रौपदी का अब ये लाज।
चुपके चुपके प्रकट भये, रिमोट लिए हाथ मे बटन।
दुसासन की हाथ चली, और उधर दबाये कृष्ण बटन।
फैली ऑचल चारो ओर, वस्त्र मे लिपटे अवला द्रौपती का बदन।
भरी सभी में लाज बची, नही हुई तब चीर हरन।।
इतना ही नही जब पुत्र मोही अंधा धृतराष्ट्र के छल कारनामों से युद्ध का एलान हुआ तो एक अंधा भी कुरूक्षेत्र में हो रहे युद्ध की लीला को देखने की जीद ठान ली तो अभियंता का ज्ञान साक्षी बना–
कुरूक्षेत्र मैदान में, रथ कौरव पाण्डव का दौड रहा था।
संयम सब कोई खो रहा था, शस्त्रो अस्त्र भेद रहा था।
विडियो कैमरा लगा पडा था, कुरूक्षेत्र मैदान में।
सीधा प्रसारण हो रहा था, हस्तिनापुर के हॉल में।
संजय टिवी देख रहा था, कॉमेन्टरी सुना रहा था।
पांडव के विकट गिरते ही, अंधा ताली पीट रहा था।
करूणा रूद्रण हो रही थी, खुन की होली हो रही थी।
सगे संबंधी कट रहे थे, शहस्त्र सेनानी मर रहे थे मॉग सुनी हो रही थी।
हस्तिनापुर की हस्ती डुव रही थी, फिर भी करूणा नही झुकी।
विनाश की घडी आ पडी और हस्तिनापुर की अस्त हुई।।
आदि काल से आज तक, सारे अविस्कार है हमारे।
जल तल थल के प्यारे प्यारे, सब कारनामे है हमारे।
हर निर्माण है हमारी, सव पर मै ही हुॅ भारी।
ईज्जत करना सिखो प्यारे, बिना हमारे कोई न दुलारे।
फिर भी हमें तुमने दुधकारा, मौन रहकर भी हमने स्वीकारा।
हमे नही है विल्कुल अभिमान, मेरा कर्म है केवल करना कल्यान।
जय अभियंता जय निर्माण, जय जय जय जय कल्यान।

इ० अजय कुमार वर्मा
अधीक्षण अभियंता (से०नि०)
अध्यक्ष, पटना प्रक्षेत्र, कुशवाहा अभियंता फोरम